KENDRIYA VIDYALAYA

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA G.C CRPF PINJORE

केंद्रीय विद्यालय जी.सी सी.आर.पी.एफ पिंजौर

विद्यालय पत्रिका

2019-20

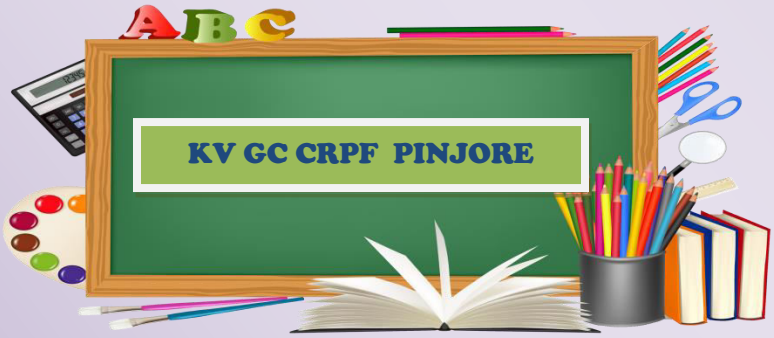

Save Tree

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सम्पादकमंडल

प्रमुख संरक्षक - श्री एस.एस रावत
(उप-आयुक्त गुरुग्राम संभाग, गुरुग्राम)

संरक्षक- श्रीमती हरजीत कौर
(प्राचार्या, के.वि के.रि.पु.बल, पिंजौर)

सम्पादक (हिंदी विभाग)– श्री सुनील कुमार मिश्र(परास्नातक शिक्षक, हिंदी)
- श्री सुरेन्द्र कुमार (प्रशि.स्ना शिक्षक, हिंदी)
- श्री त्रिभूषण (प्रशि.स्ना शिक्षक, हिंदी)

सम्पादक (अंग्रेजी विभाग)– सुश्री मेघा गर्ग(परास्नातक शिक्षिका, अंग्रेजी)
- श्रीमती मुक्ता शर्मा (प्रशि.स्ना शिक्षिका, अंग्रेजी)
- श्रीमती प्रोमिला देवी (प्रशि.स्ना शिक्षिका, अंग्रेजी)

सम्पादक (संस्कृत विभाग)–श्री युगेश्वर वर्मा(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत)

सम्पादक (कला विभाग)-श्रीमती बीना जोशी (प्रशि.स्ना शिक्षिका, कला)

सम्पादक (प्राथमिक विभाग) –श्रीमती मंजीत कौर (मुख्याध्यापिका प्राथ.)

प्राचार्या के उदगार .....

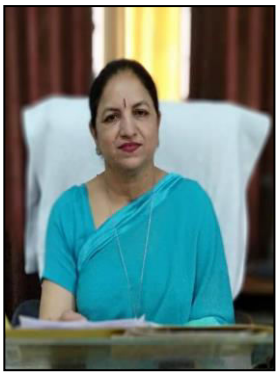

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन|

रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें सिर ऊँचा मन ||

जिन्दगी खूबसूरत है... और इस ख़ूबसूरती का मूर्तरूप हैं ये नन्हे-मुन्ने बच्चे | खूबसूरत बच्चों की कोमल भावनाओं एवं उनकी तत्परता के फडफडाते पंखों को एक आसमान देने का प्रयास है यह विद्यालय पत्रिका |

शिक्षा के मूलभूत उद्देश्य “बच्चों का चहुँमुखी विकास” में विद्यालय-पत्रिका की विशेष भूमिका होती है | शैक्षिक उन्नति के साथ-साथ उनकी रचनात्मक ऊर्जा को एक नई पहचान मिलती है | उनके आतंरिक एवं मौलिक चिंतन को उनके लेखों के माध्यम से बढ़ावा मिलता है | मेरा पूर्ण विश्वास है कि ये नन्हे कलाकार भावी रचनाकार के रूप में राष्ट्रहित में अपना सहयोग देने में सफल होंगे |

पत्रिका प्रकाशन के सुअवसर पर मै केन्द्रीय विद्यालय संगठन गुरुग्राम संभाग के गर्व माननीय एस.एस. रावत (उपायुक्त) एवं आदरणीय डॉ.प्रताप सिंह जी (अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति एवं पुलिस उपमहानिरीक्षक) का ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका सहयोग हमें नित नई ऊर्जा और स्फूर्ति प्रदान करता है तथा जिनके आशीर्वाद से पत्रिका का प्रकाशन कार्य सफल हुआ | पत्रिका प्रकाशन में दिए गए सहयोग के लिए मै विद्यालय परिवार के सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ |

शुभकामनाओं सहित ....

हरजीत कौर

प्राचार्या (के.वि.पिंजौर)

सम्पादक के शब्द.....

****संदेश****

“वे मुस्काते फूल, नहीं

जिनको आता है मुरझाना,

वे तारों के दीप, नहीं

जिनको भाता है बुझ जाना ||”

कवयित्री महादेवी वर्मा की ये पंक्तियाँ नन्हे बच्चों की मुस्कान, चमक, उत्साह, उमंग को दर्शाती हैं | बच्चों को निरंतर क्रियाशील एवं आत्मविश्वास से लबरेज रहने का संदेश देती हैं | बच्चे स्वभावतः उर्जावान होते हैं | उनमे एक अनोखी रचनात्मक ऊर्जा होती है |

विद्यालय पत्रिका जहाँ एक ओर बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को उभारने एवं निखारने का माध्यम है, वहीं उनके विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं का दर्पण भी | जहां इससे विद्यालय के क्रियाकलाप और उसकी उपलब्धियों की झलक दिखाई देती है, वहीँ यह विद्यालय की विचारधारा एवं उसके भावी कार्यक्रम की ओर भी इंगित करती है |

विद्यालय पत्रिका के मार्गदर्शन एवं सफल सम्पादन का श्रेय आदरणीया प्राचार्या श्रीमती पुष्पा शर्मा तथा सम्पादक मंडल के सदस्यों को जाता है, जिनके कुशल मार्गदर्शन एवं सहयोग से विद्यालय पत्रिका को साकार रूप प्राप्त हो सका |

शुभसंदेश के साथ .....

श्री सुनील कुमार मिश्र

(परास्नातक शिक्षक, हिंदी)

वनमहोत्सव- 1st to 7th July

Annual Function -7 May

National Integration Camp 2019

Youth Parliament Competition

हिंदीविभाग

“भारतीय-संस्कृति की आत्मा है हिंदी ”

डिजिटल इंडिया

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा शुरु की गई एक मुहिम है। यह मुहिम श्री नरेंद्र मोदी ने 1 जुलाई 2015 को शुरु की। यह मुहिम इसलिए चलाई गई ताकि भारत में लोगों को टेक्नोलॉजी और डिजिटल दुनिया का ज्ञान दिया जा सके। सरकार द्वारा इस प्रोजेक्ट को साल 2019 तक पूरे भारत में डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करने की योजना है। साथ ही इस योजना के अनुसार ग्रामीण इलाकों को तेज़ इंटरनेट की सुविधा प्रदान की जाएगी। इस मुहिम से कागज़ों में लेखा - पढ़ी होने वाला समय भी बचेगा और कार्यालयों में लोगों की लंबी कतारों में कमी आएगी।

इस संचार में मुख्य भूमिका 'संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय' का है जो इसके पीछे काम में लगे हुए हैं। अगर यह योजना भारत में पूर्ण रूप से सफल हो जाती है तो इससे देश के विकास में बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। सरकार ने इस मुहिम के साथ साथ आधार कार्ड से मोबाइल नंबर, PAN, Bank Account जैसी सेवाओं को भी जोड़ा है। साथ ही अब नौकरी के लिए आवेदन देना आसान हो गया है। इससे देश भी भ्रष्टाचार मुक्त बनेगा।

गरिमा
कक्षा - ग्यारवीं 'अ'

"गुम होता बचपन"

⇒ नन्हा सा बच्चा। उसकी पीठ पर बड़ा सा बस्ता। हाथों में बोतल। आँखों पर चश्मा। स्कूल से ट्यूशन। ट्यूशन से घर। घर में फिर होमवर्क का तनाव। मम्मी की डांट। मैडम की छिः छिः। बेचारा बचपन जाए तो कहाँ जाए। इन्हें देखकर तो बड़े-बड़े तनाव-ग्रस्त लोग भी सिहर जाते हैं। वे चाहकर भी यह नहीं कह पाते - काश! "हम बच्चे होते"। बच्चों में बचपन है कहाँ। वह खिल-खिलाहट, वह बिना बात किए खेलना, कूदना, वह मस्ती है कहाँ?

⇒ प्रगति नाम का एक दानव है, जो लील गया है बचपन को चिकित्सक हैरान हैं कि जो ब्लड प्रेशर कभी बूढ़ों को हुआ करता था। वह इन नन्हें बच्चों को होने लगा है। नन्हें बच्चे बड़े आराम से कहने लगे हैं कि मैं तनाव में हूँ। वे दिन-रात एक ही फिकर में रहते हैं मुझे फर्स्ट आना है। इसके लिए वे न तो ठीक से खाते हैं; न ठीक से सोते हैं। न मामा का घर, ना मौसी का प्यार। ना छुट्टी की, ना मौज-मस्ती, ना त्योहारों का हुड़दंग। चौबीसों-घंटे बारह महीने उन पर एक ही तनाव भारी है प्रथम कैसे आओगे। दुनिया में मुट्ठी में कैसे करोगे?

⇒ मनोवैज्ञानिक इस बात पर एकमत हैं कि बचपन की हत्या में सबसे बड़े दोषी हैं माता-पिता। वे अधूरे अपने सपनों को बच्चों के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं। जो ठीक नहीं है। बचपन नहीं जीने देंगे तो जवानी और बुढ़ापा सुखदायी नहीं रहेगा।

- शिवम् कुमार
बारहवीं "ब"

प्रस्तुत कविता पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित है आज के समय में पर्यावरण को बचाने के लिए प्रयास कम किये जा रहे हैं जबकि पर्यावरण संरक्षण की तरफ ध्यान बहुत कम जा रहा है उसी से सम्बन्धित यह कविता है कविता इस प्रकार से है।

कविता

शीर्षक :→ आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ

आओ यह संकल्प जगाएँ
अपने मन को स्वच्छ बनाएँ
पर्यावरण को नष्ट होने से बचाएँ
आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ – 1

फैलाओ अपनी संकल्प भावनायें
सबके मन में जगे अथाह संभावनायें
प्रकृति को प्रदूषित होने से बचाएँ
आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ – 2

जल ही जीवन है इसकी हर एक-एक बूँद बचाएँ
घर-घर पौधा लगाकर अलख जगाएँ
ले नया संकल्प कि कोई वृक्ष न कटने पाएँ
आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ – 3

ये प्रकृति ही जीवन है, जीवन को बचाएँ
न जल दूषित हो, न कचरा फैलाएँ
सबके मन में पर्यावरण संरक्षण की जोत जगाएँ
आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ – 4

पेड़ काट कर ना जीवन को दुखमय बनायें
हरियाली को बचाकर, सुखमय वातावरण बनायें
हम सब मिलकर करें प्रयास, माँ वसुधा को पावन बनायें
आओ सबका जीवन स्वर्ग बनाएँ — 5

रचनाकार→ त्रिभूषण
प्रशिक्षित स्नातक
शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, समूह
केन्द्र, के०रि०पु०बल –
पिंजौर (हरियाणा)

हरीहरी खेतों मे-,
बरस रही है बून्दे,
खुशीखुशी को भाया सावन-,
भर गया मेरा आँचल।
ऐसा लग रहा है जैसे,
मन की कलियाँ खिल गयी वैसे,
ऐसा की आया बसंत,
लेके फूलों का जशन।
धूप से प्यासी मेरे तन को,
बून्दों ने दी एसी अंगड़ाई,
पड़ा मेरा तनमन,
लगता है मई हूँ एक दमन।
यह संसार है कितना सुंदर,
लेकिन लोग नही उतने अकलमंद,
यही है एक निवेदन,
न करो प्रक्रति का शोषण।

नामकनिका -
कक्षा नवीं- 'ब '

बापू

बच्चो को बापू प्यारे थे,
वह सारे जग से न्यारे थे॥
अच्छी बातें सिखलाते थे,
सब को गले लगते थे॥
सत्य, अहिंसा परम धर्म है,
यह था उनका नारा॥
जाती धर्म से बढ़कर है,
यह भारत देश हमारा॥

नामकशिश शर्मा-
कक्षा नवीं- 'ब '

मेरा भारत

छोटा सा है देश हमारा,
भारत इसका नाम।
प्यार बांटना इसका काम,
जहां जन्मे श्री कृष्णघनश्याम।-
ऐसा है इसका नाम,
यात्रियों का दो यह स्थान।
धर्म इसमे है अनेक,
हिन्दू या मुस्लिम है सब एक ।
यह है संतो का निवास,
भगवान भी करते है यहा वास।
इधर रंगबिरंगे फूल खिले-,
माँ की ममता का सुवास।
ऐसा, प्यारा सा है देश हमारा,
भारत इसका नाम।
प्यार बांटना इसका काम,
जहां जन्मे कृष्णघनश्याम।-

नाम तृषी -शर्मा
कक्षाछठवी - 'ब'

मैरी क्रिसमस

क्रिसमस आया क्रिसमस आया,
बच्चों का है मन ललचाया,
सेंटाक्लोज आएंगे,
नए खिलौने लाएँगे।
सेंटाक्लौज ने दी आवाज़,
एनी आओ, येनी आओ,
जॉनी आओ, जॉन आओ,
यीशु की ये याद का दिन है,
बच्चों का ये प्यार का दिन है।

नामशीतल चौहान -
कक्षा आठवीं- 'ब'

<u>कविता</u>

रात ज़ोर से बरसा बादल,

भीगा मेरा सारा आँगन,

वो जो नन्हीनन्ही चिड़िया-,

आती थी सुबहसवेरे-,

चुगने दाना पानी पीने,

वह आज नहीं है आई,

कलरव उसका मै न सुन पाई,

आज न जाने कहाँ है वह सब,

सूना करके मेरा आँगन,

क्यो पत्तों मे छिपकर बैठी,

या अपने नीड़ मे बच्चों संग सोती,

बस यही एक चिंता मुझे सताती,

आज होगी वह भूखी –प्यासी,

मै भी कैसे बिखराऊ दाना,

भीग वर्षा मे वह जाएगा सारा,

वर्षा बस तू अब थम जा,

मै फिर बिखरा दूँ थोड़ासा दाना -,

वे नन्ही जान दाने की तलाश मै,

फिर से आए मेरे घरआँगन मे-,

वे पानी पीए और दाना चुगे,

मै उन्हे देख और सुनूँ उनका कलरव ।

नाममेघा राठौर -

कक्षा नवीं- 'ब '

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नही तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा साध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर, पोधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
जिंदा रख, दिल मे उम्मीदों को,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमाथमा सा-, चल निकलेगा॥

नाम श्रेया-धीमान

कक्षा नवीं- 'ब '

गुरु

जिसे देता ये जहां सम्मान,
जो करता है देशों का निर्माण।
जो बनाता है इंसान को इंसान,
जिसे करते है सभी प्रणाम।
जिसकी छाया मे मिलता ज्ञान,
जो कराये सही दिशा की सही पहचान।
वो है हमारे गुरु महान,
मेरे गुरु को शतशत प्रणाम।-

नामनंदिनी-

कक्षा नवीं- 'ब '

क्लास मोनीटर

जो क्लास मे बने मोनीटर,
कोरी शान दिखाते है।
आता जाता कुछ भी नहीं,
पर हम पर रोब जमाते है।
जब क्लास मे टीचर नहीं,
तो खुद टीचर बन जाते है।
कॉपीपेंसिल लेकर -,
बस नाम लिखने लग जाते है।
खुद तो हमेशा बाते करें,
हमें चुप करवाते है।
अपनी तो बस गलती माफ,

हमें बलि चढ़ाते है।
क्लास तो संभाल पाते नहीं,
बस चीखते और चिल्लाते है।
भगवान बचाए इन मोनीटर से,
इन्हे हम नही चाहते है।**नामजगदीप -**

कक्षा आठवीं- 'ब'

नन्ही चिड़िया

सूरज निकला,
धूप खिल गई।
मम्मी मुझको भूख लग गई,

चीची चीची चीची ची
कहा उड़ गई मम्मी जी?
छोटी नन्ही चिड़िया हूँ,
माँ तेरी मै गुड़िया हूँ।
जल्दी से अब आ जाओ,
खाना मुझे खिला जाओ।
चुपके से सो जाऊँगी,
चीची नहीं मचाऊंगी।

नामभूमिका -
कक्षा-3 'अ'

तारे

कर बादल की खूब सवारी,
थककर आए तारे,
माँ जल्दी से पानी दे दो,
थक गए हम तो सारे।
क्याक्या देखो तुमने-,
आज मुझको भी बताओ,
मीठामीठा शरबत ले लो-,
पूरी बात सुनाओ।
धरती का जीवन देखो,
जंगल नहीं पहाड़ देखो,
हमने आसमान से एक,
नया संसार।
कहतेकहते लगे उगने-,
नन्हेंनन्हें तारे-,
माँ ने जो बिस्तर लगबाया,
सो गए पलपल मे सारे।-

नामपालक-
कक्षा6– 'अ'

3 कविता- मेरा दोस्त

चिंटू मेरा अच्छा दोस्त
खाता अंडा मखन टोस्ट
सुबह सुबह जल्दी उठता हे
पाढ़शाला मे अच्छा पढता हे
रोज नये इनाम पाता हे
झटपट आकर दिखलाता हे
अच्छा हे ना मेरा दोस्त

मन्नत 5-ब

पानी और धूप

अभी अभी थी धूप बरसने-
लगा कहाँ से यह पानी,
किसने फोड़ छड़े बादल के,
की है इतनी शैतानी।
सूरज ने क्यों बंद कर लिया,
अपने घर का दरवाजा,
अपनी माँ ने भी क्यो उनको,
बुला लिया कहकर आजा।
ज़ोरज़ोर से गरज रहे है-,
बादल है, किसके काका,
किसको डाँट रहे है,
किसने कहना नहीं सुना माँ का।

नामकशिश शर्मा-
कक्षा नवी 'ब'

ENGLISH SECTION

The school magazine is a humble attempt to set the minds of the budding artistes free and allow them to wander in the untrodded lanes of their imagination and creativity. It is an Endeavour to enable the young talents to learn to put their imaginative thoughts and ideas into words.

It is really a pleasing experience to see these enthusiastic writers voicing their feelings through stories, poems, jokes and paintings. I hope our worthy readers will definitely appreciate the efforts of these unpolished gems.

I extend my sincere gratitude to Mrs.Harjeet Kaur, Principal and Patron of the school magazine, for her constant support and encouragement.

I am thankful to all the members of the editorial team for being always there throughout the entire process of planning and publication of the magazine.

Finally, I wish all the readers my best wishes and Happy Reading.

Ms.Megha Garg

PGT (English)

A BLESSING

THE MOTHER'S HEART

THE HEROS WILL

THE SOFTNESS OF FLOWERS

SWEETNESS FILLED

THE CHARM AND FORCE

THAT EVER SWAY

THE ALTAR- FIRE

FLAMING PLAY;

THE STRENGTH THAT LEADS

IN LOVE OBEYS.

FAR-REACHING DREAMS AND

PATIENT WAYS;

ETERNAL FAITH IN SELF

IN ALL

THE LIGHT DIVINE IN GREAT

IN SMALL;

ALL THESE AND MORE THAN

I COULD SEE,

TODAY MAY 'MOTHER'

GREAT TO THE.

HIMANISH

IX *B*

A SOLDIER

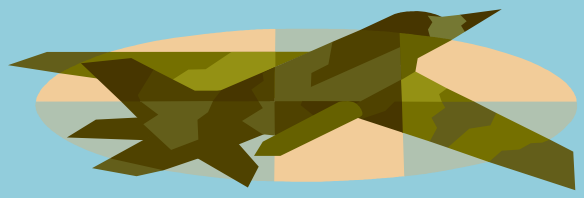

I WAS THAT WHICH OTHERS DID NOT WANT TO BE

I WENT WHERE OTHERS FEARED TO GO,AND DID BUT OTHERS FAILED TO DO.

I ASKED NOTHING FROM THOSE WHO GAVE NOTHING, AND RELUCTANTLY ACCEPTED THE THOUGH OF ETERNAL LONE FINESS

..... SHOULD I FAIL,

I HAVE CRIED, PAINED, AND HOPRD.....AND MOST OF ALL,

I HAVE LIVED TIMES OTHERS WOULD SAY ARE BEST AT LEAST SOMEDAY, I WILL BE ABLE TO SAY THAT I PROUD OF WHAT I WAS.....

THANKS FOR SOLDIER

SALUTE

RAKSHA

VIII A

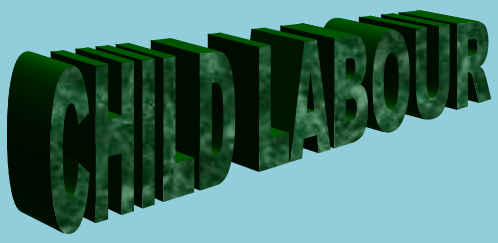

CHILD LABOUR

THEY WORK IN SUN

FOR A PIECE OF BUN

DON'T CHASE THEM LIKE HEN

THEY HAVE A SMALL PLACE LIKE DEN

INVENT RULES AND REGULATIONS

TO ABOLISH THIS VICIOUS CIRCLE

CHILD LABOUR SHOULD NOT BE A FASHION

THEY ARE OUR NEXT GENERATION

GIVE THEM TIME TO SIT UNDER TREE

AND TO SIP A LITTLE CUP OF TEA

PLEASE LEAVE THEM FREE

THEY SHOULD BE HAPPY LIKE A BEE

……………..

ABHINAY
X A

THOUGHTS

I. FAITURE WILL NEVER OVERTAKE ME IF MY DETERMINATION TO SUCCEED IS STRONG ENOUGH.
II. DON'T TAKE REST AFTER YOUR FRIST VICTORY BECAUSE IF YOU FAIL IN SECOND MORE LIPS ARE WAITING TO SAY THAT YOUR FIRST VICTORY WAS JUST LUCK.
III. ALL BIRDS FIND SHELTER DURING A RAIN .BUT EAGLE AVOIDS RAIN BY FLYING ABOVE THE CLOUDS.
IV. MAN NEEDS DIFFICULTS IN LIFE BECAUSE THEY ARE NECESSARY TO ENJOY THE SUCCESS.
V. IF YOU WANT TO SHINE LIKE A SUN . FIRST BURN LIKE A SUN.
VI. ALL OF US DO NOT HAVE EQUAL TALENT BUT, ALL OF US HAVE AN EQUAL OPPORTUNITY TO DEVOELOP OUR TALENTS.
VII. BE MORE DEDICATED TO MAKING SOLID ACHIEVEMENTS THAN IN RUNNING AFTER SWIFT BUT SYNTHETIC HAPPINESS.
VIII. THINKING SHOULD BECOME YOUR CAPITAL ASSET,NO MATTER WHAT EVER UPS AND DOWNS YOU COME ACROSS IN YOUR LIFE.

JAGPREET KAUR
XII-COMMERCE

FUN WITH GRAMMAR

UNMARRIED GIRL-KANYA KUMARI

MAKE JUICE-BANARAS

SAINTS HAIR-RISHIKESH

EAR CITY-KANPUR

COBRA CITY-NAGPUR

ADVICE CITY-RAIPUR

RISING CITY-UDAIPAUR

ALERT CITY-HOSHIARPUR

SILLY CITY-SILLI GUDI

RIYA GUPTA

IX B

HAPPINESS

HAPPINESS COMES NOW AND THEN

WE CAN NOT BE SURE JUST WHEN,

BUT WHEN ITS THERE, ENJOY EACH HOUR,

BECAUSE HAPPINESS HAS SUCH POWER.

JOY TO YOU IT WILL BRING

EVEN MAKE SOMEONE ELSE SING

WHAT PEACE OF MIND HAPPINESS CAN SHOW

MAKING YOU AND OTHERS GLOW,

NATURE IT, MAKE IT LAST

FORGET THE TROUBLES OF THE PAST

NEVER FEAR THAT IT WILL GO

FOR IT COULD ALWAYS GROW

AND THEN TOMORROW THERE IT WILL BE

FOR HAPPINESS CAN SET YOU FREE !

VANDANA

VI B

KNOWLEDGE

KNOWLEDGE IS IN YOU ,
KNOWLEDGE IS IN ME .
KNOWLEDGE IS A GIFT,
FROM EVERYTHING TO ME .
KNOWLEDGE
I CAN FIND,
KNOWLEDGE
I CAN FEEL.
AND IT IS
SOMETHING ,
THAT NO
ONE CAN EVER
STEAL ,
KNOWLEDGE
MAKE YOU SHINE,
KNOWLEDGE
MAKE YOU BRIGHT
.
AND
KNOWLEDGE IS THE
PATH,
FROM
DARKNESS TO
LIGHT.
KNOWLEDGE
IS HUGE ,
A GREAT
PART OF LIFE .
WITHOUT IT,
WE CAN
NEVER SURVIVE.
KNOWLEDGE
IS TO GAIN,
TO ADAPT
AND IMPROVE .
KNOWLEDGE
IS A SWORD,
WHICH YOU
CAN ALWAYS USE .
SO AGAIN
THE KNOWLEDGE ,
AS MUCH AS
YOU CAN.
AS YOUR
LIFE WILL SPEND
BUT IT
NEVER END

PUSHVINDER
KAUR
IX A

EVERYONE'S MOTHER

LEARNT LOVE FROM YOU

WHEN REQUIRED YOU

HUGGED ME AND LOVED ME

YOUR EARS ALWAYS LISTENED

THE VOICE OF MY HEART

YOU ALWAYS REALIZED AND GAVE ME

YOUR SHOULDER TO WEEP AND TO LAUGH

CAUGHT ME BY HANDS

WHEN I WAS FALLING

OH! MOTHER YOU ARE GREAT NEXT TO ALMIGHTY

BUT FOR ME YOU ARE

IN DEEP CORNER OF MY HEART

RAKSHA

VIIIA

NO ONE CAN TAKE YOUR PLACE,

YOU ARE EVERYTHING TO ME,

YOUR HUGS ARE WARM,

AND MAKE ME HAPPY.

YOU NURSE ME WHEN EVER I AM SICK

YOU FEED ME WHEN IAM HUNGRY

YOU HELP ME IN MY STUDIES

YOO ARE MY GUIDE

WHEN EVER I GO WRONG YOU SHOW ME THE RIGHT PATH

SHREYA DHIMAN

VII B

VII

OPEN A BOOK

OPEN A BOOK

AND YOU WILL FIND,

PEOPLE AND PLACES OF EVERY KIND;

OPEN A BOOK

AND YOU CAN BE,

ANYTHING YOU WANT TO BE;

OPEN A BOOK

AND YOU CAN SHARE,

WONDOROUS WORD YOU FIND IN THERE.

OPEN A BOOK

AND I WILL TOO,

YOU READ TO ME,

AND I'LL READ TO YOU.

RAMJOT KOUR – IX B

SUCCESS MANTRA

READ BUT WRITE MORE,

TALK BUT THINK MORE,

PLAY BUT STUDY MORE ,

YOU WILL SUCCEED SURE

WORK BUT SLEEP LESS

CHEW BUT EAT LESS

LAUGH BUT WEEP LESS

YOU WILL SUCCEED SURE

HATE BUT LOVE MORE

QUARREL BUT LOVE MORE

ORDER BUT OBEY MORE

PEOPLE WILL LOVE YOU SURE

SLEEP BUT AWAKE MORE

LOSS BUT FIND MORE

YOU WILL SUCCEED SURE

MANISH KUMAR

IX A

TODAY

Today is the day !

This is the one!

Today is a day !

We will learn and have fun !

Today we will grow !

Today we will be kind !

Today is important !

Don't leave it behind !

Let's give it our all !

Let's never stop !

We'd better get busy

Before we all .....

ARYAN
VIB

why are teachers so special

When I started in school

This is day seemed so far away

Now it's here and I can't believe

That time has passed so quickly.....

But through your encouragement and guidance

I feel I am ready for tomorrow challenges

Teachers play such an important part

In shaping and guiding

Especially teachers like you

Thank you for caring so much

MANASHVI

VIIA

WHY ARE WE LEARNING GERMAN LANGUAGE?

We need to learn German because it is a foreign language. German is the most widely spoken native language in Europe. At school level we can learn many things, like we can participate in various global competitions. It is not very difficult also. We can make new friends from Germany online also like google, facebook, twitter, instagram etc. , once we know the Language. We learn about the culture, dress and food of a foreign country. We can also find jobs online as well as in Germany as it will be easier to communicate in native Language.

It is said that a kid can learn foreign language quickly and better than adults. It gives us exposure to various new areas . Foreign Languages provide a competitive edge in career choices as one is able to communicate in more than one language. We can study at German Universities,schools and colleges etc.I recommend that we all should learn German language as it is a great opportunity that our school has provided us with to attain an extra edge.

Tammana
9th b

A BLESSING

THE MOTHER'S HEART

THE HEROS WILL

THE SOFTNESS OF FLOWERS

SWEETNESS FILLED

THE CHARM AND FORCE

THAT EVER SWAY

THE ALTAR- FIRE

FLAMING PLAY;

THE STRENGTH THAT LEADS

IN LOVE OBEYS.

FAR-REACHING DREAMS AND

PATIENT WAYS;

ETERNAL FAITH IN SELF

IN ALL

THE LIGHT DIVINE IN GREAT

IN SMALL;

ALL THESE AND MORE THAN

I COULD SEE,

TODAY MAY 'MOTHER'

GREAT TO THE.

HIMANISH

IX B

संस्कृतविभाग

“सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने । विद्यारूपे
विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते ॥”

संस्कृत विभागः

सम्पादकीयम्

केन्द्रीय- विद्यालय समूह केन्द्र सी० आर० पी० एफ० पिंजौर द्वारा विद्यालय- पत्रिकायाः प्रकाशनाय संस्कृत-विभागान्तर्गत- संस्कृत-विषयमवलम्ब्य अनेकासां रचनानां सङ्कलने गर्वानुभूतिर्जायते। अत्र कोमलमतिच्छात्राणां विविधाः रचनाः सङ्कलिताः। एतासु रचनासु छात्राणां विविध- विचाराणां भावानाञ्च दर्शनं भवति। अत्र अनेके विषयाः समाविष्टाः। सूक्तयो यत्र संस्कृत- साहित्यस्य विषय- वैविध्यं सूचयन्ति तत्र अस्य गौरवानुभूतिमपि प्रदर्शयन्ति 'मम: विद्यालयः' इति निबन्धः छात्राणां विद्यालयं प्रति अनुरक्तिं सूचयति अपरत्र च 'दीपावली' इति लेखः 'उत्सव- प्रियः भारत देशः' इत्यस्य सङ्केतमभिधत्ते। अनुशासनं विना व्यवस्थित- जीवनस्य कल्पना कर्तुं न शक्यते। अस्य महत्त्वमुद्घोषयन् निबन्धः अत्र बहु- विधं सूचयति। छात्राणां कृते तु अनुशासनं परमाव- श्यकम्। यतोहि एषः कालः छात्राणां जीवनस्य बीजवपन- कालः।

छात्राणां लेखनस्य प्रयासोऽयं नितरां प्रशंसार्हः। कामं रचना एता नोत्कृष्टाः न च परिमार्जिताः किन्तु तेषां प्रयासः भावि-लेखकस्य सङ्केतकः इति निश्चप्रचं वक्तुं शक्यते। ते कवि- कर्मणि कविपद सार्थकतां भजेयुः इति कामना-

अपारे काव्य संसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते॥

विद्यालयस्य प्राचार्या श्रीमती पुष्पा शर्मा धन्यवादार्हा यस्याः प्रेरणास्वरूपेण पत्रिकेयं साकार- रूपग्रहणं करोति। सा महाभागा एवमेव छात्रान् नूतन- रचनार्थं प्रेरयिष्यतीति दृढो मम विश्वासः।

आचार्य-युगेश्वरः
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

अनुशासनम्

यथा जीवनाय वायुः जलम् अन्नं च
अत्यावश्यकं तथैव व्यवस्थित-जीवनाय

अनुशासनम् अपि |यदा वयम् अस्मिन्
चराचरं विश्वं पश्यामः तदा इदं

सुस्पष्टं भवति यत् सर्वाणि वस्तूनि
अनुशासनं पालयन्ति |यथा सूर्यः

नियत-समयेन पूर्वस्यां दिशि उदेति नियत–
समयेन च अस्तं गच्छति | चन्द्रश्चापि

नियमित-रूपेण उदेति अस्तं च गच्छति |
प्रकृतिरपि नियमतः व्यवहरति |

मनुष्याणां जीवनेऽपि अनुशासनस्य
अनुपालनम् अनिवार्यम् |अनुशासनं विना

जीवने न किञ्चित् लभ्यम् |छात्राणां कृते तु
अनुशासनस्य पालनम् अपरिहार्यम् |
यतोहि छात्र – जीवनं जीवनस्य आरंभ-
कालः | अस्मिन् काले अनुशासनस्य
अनुपालनेनैव भावि-जीवने सफलता
संभवति |ये छात्राः अनुशासनम् नुपालयन्ति
,ते सर्वां सफलतां प्राप्नुवन्ति|एतद् विपरीतं
ये छात्र-जीवने अनुशासनहीनाः भवन्ति .ते
जीवनस्य कस्मिन्अपि क्षेत्रे सफलाः न
भवन्ति जीवन-पर्यन्तं च सीदन्ति |यदि वयं
जीवने सफलतां प्रासुम् इच्छामः तदा
अवश्यमेव अनुशासनं पालयेम |

यश

अष्टमी 'ब'

तत् किम् अस्ति ?

किमस्ति तत् पदम् ?
यल्लभते इह सम्मानम् |
किमस्ति तत् पदम् ?
यत्करोति देश-निर्माणम् ||
किमस्ति तत् पदम् ?
यं कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम् |
किमस्ति तत् पदम् ?
यस्य छायायां प्राप्तं ज्ञानम् ||
किमस्ति तत् पदम् ?
यद् रचयति चरित्रं जनानाम् |
गुरुरस्ति तत् पदस्य नाम
मम गुरून् शत-शत-प्रणामाः ||

रक्षा

अष्टमी 'ब'

सूक्ति- संग्रहः

१. विद्या विहीनः पशुः |
(विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान होता है |)
२. यत्र धर्मः ततो जयः |
(जहाँ धर्म है ,वहाँ जीत है |)
३. लोभो मूलम् अनर्थानाम् |
(लोभ सारे अनर्थों की जड़ है |)
४. परोपकाराय सतां विभूतयः |
(सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है |)
५. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः |
(कल्याण करनेवाली और मन को भानेवाली वाणी दुर्लभ होती है |)
६. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन |
(तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने का है ,फल की इच्छा का नहीं |)
७. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते |
(सारे गुण काञ्चन अर्थात स्वर्ण में ही बसते हैं |)
८. अनभ्यासे विषं विद्या |
(बिना अभ्यास के विद्या विष के समान होती है |)
९. सहसा विदधीत न क्रियाम् |
(बिना विचारे कोई काम नहीम् करना चाहिए |)
१०.चल चल पुरतो निधेहि चरणम् |
(चलो, चलो | अपने कदम निरन्तर आगे बढाते चलो |) वंशिकाअष्टमी 'ब'

SPORTS ACHIEVEMENTS:- 2019-20

PGT BIO WORKSHOP

Thank You